موضوع الخطبة :خصائص الأيام العشر من ذي الحجة وفضائلها

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :طارق بدر السنابلي (@Ghiras_4T)

शीर्षक:

ज़िलहिज्जा के १० दिनों की विशेषताएं एवं श्रेष्ठताऐं!

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

ए मुसलमानो! अल्लाह से डरो एवं उसका भय अपने हृदय में जीवित रखो। उसके आज्ञाकारी बनो एवं अवज्ञा से वंचित रहो। ज्ञात रखो कि अल्लाह तआ़ला के पालनहार होने के साक्ष्यों का एक पाठ यह भी है कि वह अपनी सृष्टि में से जिसे चाहता है सर्वश्रेष्ठ बना देता है, चाहे वे मनुष्य हों, स्थान हों, समय हों अथवा उपासनाएं हों। इसके पीछे अल्लाह की बुद्धिमत्ता ही कार्य करती है जिससे वही भली-भांति अवगत रहता है। अल्लाह का कथन है:

(وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ.)

अर्थात: "और आपका पालनहार जो चाहता है पैदा करता है एवं जिसे चाहता है चयन कर लेता है।"

हम इस उपदेश में जितना भाग में होगा ज़िलहिज्जा के प्रारंभिक १० दिनों की उन विशेषताओं का उल्लेख करेंगे जिनसे अल्लाह ने इन १० दिनों को संबंधित किया है एवं ये वे विशेषताएं हैं जिन्होंने इन १० दिनों को वर्ष के अन्य दिनों से विशिष्ट एवं सर्वश्रेष्ठ बनाया है, जिन में सर्वप्रथम विशेषता यह है कि अल्लाह ने इन १० दिनों का उल्लेख क़ुरआन में विशेष रूप से किया है, अल्लाह का कथन है:

(لِّيَشۡهَدُواْ مَنَٰفِعَ لَهُمۡ وَيَذۡكُرُواْ ٱسۡمَ ٱللَّهِ فِيٓ أَيَّامٖ مَّعۡلُومَٰتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّنۢ بَهِيمَةِ ٱلۡأَنۡعَٰمِۖ.)

अर्थात: "अपने लाभों को प्राप्त करने हेतु आ जाएं एवं उन नियत दिनों में अल्लाह का नाम लें और उन पशुओं पर जो पालतू हैं।"

यहां "अय्याम-ए-मअ़लूमात" का अर्थ ज़िलहिज्जा के १० दिन हैं, जिसका साक्ष्य इब्ने अ़ब्बास रज़ि अल्लाहू अ़न्हुमा से वर्णित एक रिवायत है कि "अय्याम-ए-मअ़लूमात" का अर्थ ज़िलहिज्जा के १० दिन हैं। (इसे बुख़ारी ने सेग़ह-ए-जज़्म के निलंबन के साथ अपनी सहीह में रिवायत क्या है, देखें: किताबुल्-ईदैन, बाबू-फ़ज़्लिल्-अ़मलि फ़ी अय्यामित्-तशरीक़।)

● ज़िलहिज्जा के १० दिनों की श्रेष्ठता का एक साक्ष्य यह भी है कि अल्लाह ने अपने कथन में इनके रात्रियों की क़सम खाई है,

(وَٱلۡفَجۡرِ ٥ وَلَيَالٍ عَشۡرٖ)

अर्थात: "क़सम है प्रातः के समय की एवं १० रात्रियों की।"

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह का कथन है:"१० रात्रि का अर्थ ज़िलहिज्जा के १० दिन हैं जैसा कि इब्नेने अ़ब्बास, इब्ने ज़ुबैर, मुजाहिद एवं उनके अतिरिक्त पूर्व व पश्चात में से कई एक व्याख्याकारों का कथन है। इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

ज़िलहिज्जा के १० दिनों की श्रेष्ठता का एक साक्ष्य यह भी है कि संपूर्ण वर्ष की तुलना में इन दिनों में किए जाने वाले पुण्य को श्रेष्ठाता प्राप्त है। उदाहरण स्वरुप इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है, वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया: "ज़िलहिज्जा के १० दिनों की तुलना में अन्य कोई दिन ऐसा नहीं है जिसमें पूण्य कार्य अल्लाह को इन दिनों से अधिक प्रिय हों।" लोगों ने प्रश्न किया: ए अल्लाह के दूत! अल्लाह के मार्ग में युद्ध लड़ना भी नहीं? तो अल्लाह के दूत ने फ़रमाया: "अल्लाह के मार्ग में युद्ध लड़ना भी नहीं, उस व्यक्ति को छोड़कर जो अपने प्राण एवं धन दोनों लेकर अल्लाह के मार्ग में निकला फिर किसी वस्तु के साथ वापस नहीं आया।" (बुख़ारी: ९६९, अहमद: १/३३८-३३९, उल्लेख किए गए शब्द अहमद के हैं।)

इब्ने रजब रहिमहुल्लाह के कथन का सारांश: "यह हदीस बहुत ही सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोच्च है और यह इस बात का उल्लेख है कि छोटा पुण्य कार्य भी श्रेष्ठता के स्थान को प्राप्त कर लेता है, (परंतु इस शर्त के साथ कि) जब उस कार्य को श्रेष्ठ समय में क्या गया हो, यहां तक कि वह श्रेष्ठ समय में पूर्ण होने के कारण अन्य श्रेष्ठ कार्यों पर भी श्रेष्ठता प्राप्त कर लेता है और उन्हीं में से ज़िलहिज्जा के १० दिनों के भी पुण्य कार्य हैं जो अन्य

श्रेष्ठता वाले कार्य से भी सर्वश्रेष्ठ हैं एवं इससे युद्ध के सर्वश्रेष्ठ प्रकार के अतिरिक्त कोई भी पुण्य कार्य अलग नहीं है और यह वह व्यक्ति है जो अपने प्राण एवं माल के साथ युद्ध में निकले और कुछ भी लेकर ना लौटे। एवं यह हदीस इस बात पर भी साक्ष्य है कि ज़िलहिज्जा के १० दिनों के नफ़्ली उपासना रमज़ान के १० दिनों के नफ़्ली उपासना की तुलना में श्रेष्ठ है, इसी प्रकार ज़िलहिज्जा के १० दिनों के अनिवार्य उपासना रमज़ान के १० दिनों के अनिवार्य उपासना की तुलना में श्रेष्ठ है। इब्ने रजब रहिमहुल्लाह के कथन का सारांश समाप्त हुआ। (फ़तहुल्-बारी:९/११-१६, प्रकाशक: मकतबतुल्-गुरबा-आल्-असरिया मदीना)

● ज़िलहिज्जा के १० दिनों की श्रेष्ठता का एक साक्ष्य यह भी है कि इसमें अ़रफ़ा का दिन आता है, जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने अपने धर्म को पूर्ण किया एवं इस श्लोक को अवतरित किया:

(ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِى وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَـٰم دينا.)

अर्थात: "आज हमने तुम्हारे हेतु तुम्हारे धर्म पर पूर्ण विराम लगा दिया, एवं अपनी वरदानें तुम पर पूरी कर दीं और तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम से प्रसन्न हो गया।"

● ज़िलहिज्जा के १० दिनों की श्रेष्ठता का एक साक्ष्य यह भी है कि इसमें बलिदान देने का दिन है जो सबसे बड़े हज का भी दिन है। और यही वह दिन है जिसमें बहुत सारे उपासना इकट्ठा हो जाते हैं, वो ये हैं: बलिदान देना, चक्कर लगाना, दौड़ना, बाल मुंडवाना अथवा कटवाना, कंकर मारना (रम्मि जमरात करना)' नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: "

अल्लाह तआ़ला के निकट सर्वश्रेष्ठ दिन बलिदान का दिन (१० वीं ज़िलहिज्जा का दिन) है, फिर विश्राम लेने का दिन (११वीं ज़िलहिज्जा का दिन) है।" (इसे अबू दाऊद: १७६५ ने अब्दुल्लाह बिन फ़ुर्त रज़ि अल्लाहू अ़नहु की हदीस से प्रतिलिपि की है एवं अल्लामा अल्-बानी ने सहीह कहा है।) ◈ ए मुसलमानो! इन १० दिनों में निम्नलिखित ६ पुण्य कार्यों को करना बहुत ही बहुमूल्य, महत्त्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ है:

(१) अधिक से अधिक अल्हमदुलिल्लाह, ला-इलाह-इल्लल्लाह एवं अल्लाहू-अकबर को पढ़ना, अब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि अल्लाहू अ़न्हुमा से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह के निकट इन १० दिनों की तुलना में किसी भी दिन पुण्य कार्य करना अधिक प्रिय एवं बड़ा नहीं है,इस कारणवश इन दिनों में अल्हमदुलिल्लाह, ला-इलाह-इल्लल्लाह एवं अल्लाहू-अकबर अधिकतम् पढ़ा करो।" (इसे अहमद: २/१३१ ने रिवायत किया है, एवं अल्-मुस्नद: ६१५४ के शोधकर्ताओं ने कहा है कि यह हदीस सहीह है।)

बुख़ारी रहिमहुल्लाह का कथन है: "इब्ने उ़मर एवं अबू हुरैरा इन १० दिनों में मंडी की ओर निकलते तो उच्च स्वर के साथ तकबीर पढ़ते, इस कारणवश लोग भी उन्हें देखकर तकबीर कहने लगते।" (इसे बुख़ारी ने किताबुल्-ईदैन, बाबू-फ़ज़्लिल्-अ़मलि फ़ी अय्यामित्-तशरीक़ में रिवायत किया है।)

तकबीर का रूप यह है: "अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, ला-इलाह-इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, वालिल्लाहिल हम्द।"

ज्ञात हुआ के इन १० दिनों में अल्हमदुलिल्लाह, ला-इलाह-इल्लल्लाह एवं अल्लाहू-अकबर को पढ़ना वैध है। मस्जिदों, गृहों, पथों एवं हर उस स्थान पर इनको पढ़ा जा सकता है जहां अल्लाह का स्मरण करना वैध है, ताकि उपासना का प्रदर्शन एवं अल्लाह के सर्वोच्च होने का प्रचार-प्रसार हो सके। वह इस प्रकार की पुरुष इन मंत्रों का उच्च स्वर के साथ सस्वर पाठ करे एवं महिलाएं यदि पुरुषों के बीच हों तो धीमी स्वर में पढ़े।

आज के युग में तकबीर की सुन्नत को त्याग दिया गया है, आप बहुत कम लोगों को तकबीर का सस्वर पाठ करते हुए सुनेंगे, इस कारणवश इस सुन्नत को जीवित करने, एवं लापरवाहों को सावधान एवं सचेत करने हेतु उच्च स्वर के साथ तकबीर का सस्वर पाठ करना चाहिए, ताकि देखा देखी लोग तकबीर पढ़ने की ओर जागरूक हों, प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से तकबीर पढ़े, एक स्वर में समग्र रूप से तकबीर पढ़ना अवैध है।

(२) इन १० दिनों में जो पुण्य कार्य वैध हैं उनमें एक उपवास रखना भी है, इस कारणवश मुस्लिम दास हेतु यह बहुत ही मुस्तहब कार्य है कि वह ज़िलहिज्जा के ९ दिनों में उपवास रखे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़िलहिज्जा के ९ दिनों में उपवास रखा करते थे। हुनैदा बिन ख़ालिद अपनी पत्नी से और वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों से रिवायत करती हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़िलहिज्जा के ९ उपवास, आशूरा के दिन (१० वीं मुहर्रम को) एवं प्रत्येक महीने में तीन उपवास रखते एवं प्रत्येक महीने के प्रथम सोमवार को और उसके पश्चात वाले गुरुवार को फिर उसके पश्चात वाले गुरुवार को उपवास रखते थे।

(इसे अबू दाऊद: २४३७ एवं नसई: २४१७ ने रिवायत किया है, उल्लेख किए गए शब्द नसई के हैं एवं अल्लामा अल्-बानी ने इसे सहीह कहा है।)

अबू उमामा अल्-बाहिली रज़ि अल्लाहू अ़नहु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रश्न ने किया: (मुझे ऐसे कार्य का आदेश दीजिए जो मेरे हेतु लाभदायक हो)' आपने फ़रमाया: "तुम व्यवस्था पूर्वक उपवास रखो क्योंकि इसका कोई उदाहरण नहीं है।" (इसे नसई: २८४० एवं अहमद: ५/२४९ ने रिवायत किया है, उल्लेख किए गए शब्द नसई के हैं, अहमद के शब्द ये हैं: मैंने कहा: मुझे ऐसे कार्य का आदेश दीजिए जो मुझे स्वर्ग में प्रवेश करवा दे, आपने फ़रमाया: "तुम व्यवस्था पूर्वक उपवास रखो क्योंकि इसका कोई उदाहरण नहीं है।" फिर द्वितीय बार आप के निकट आया तो आपने मुझसे कहा: "व्यवस्था पूर्वक उपवास रखो।" इस हदीस को अल्लामा अल्-बानी ने सहीह कहा है एवं अल्-मुस्नद के शोधकर्ताओं ने कहा है: इसकी सनद मुस्लिम की शर्त पर सहीह है।)

(३) इन १० दिनों में जो पुण्य कार्य वैध हैं उनमें अ़रफ़ा के दिन का उपवास रखना भी है, इसका साक्ष्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: "अ़रफ़ा के दिन का उपवास ऐसा है कि मैं अल्लाह पाक से आशा करता हूं कि एक वर्ष पूर्व एवं एक वर्ष पश्चात के पापों का कफ़्फ़ारा हो जाए।"

(४) इन १० दिनों में जो पुण्य कार्य वैध हैं उनमें एक ईद की नमाज़ पढ़ना भी है, जो कि एक प्रसिद्ध बात है।

(५) इन १० दिनों में जो पुण्य कार्य वैध हैं उनमें बलिदान के पशुओं को वध (ज़ब्ह) करना भी है, यह प्रत्येक धनी लोगों हेतु सुन्नते मुअक्कदा है,

ईदुल्- अज़हा के दिन बलिदान की पशुओं का वध करना अन्य तश्रीक़ के दिनों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ है, क्योंकि ईदुल्-अज़हा का दिन ज़िलहिज्जा के प्रारंभिक १० दिनों का सबसे अंतिम दिन है एवं ये १० दिन वर्ष के संपूर्ण दिनों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ हैं। जबकि तश्रीक़ के दिन ज़िलहिज्जा के १० दिनों में सम्मिलित नहीं हैं। इसके अतिरिक्त ईद के दिन पशुओं का बलिदान देना पुण्य कार्य के संदर्भ में शीघ्रता को अपनाने का मौलिक पाठ है। (तसहीलुल्-फ़िक़्ह: ९/२२९, लेखक: शैख़ अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ अल्-जबरीन रहिमहुल्लाह)

(६) ज़िलहज्जा के १० दिनों में जो पुण्य कार्य वैध हैं उनमें हज्ज एवं उमरा करना भी है। इन १० दिनों में क्या जाने वाला यह सर्वश्रेष्ठ पूण्य कार्य है। जिसको अल्लाह तआ़ला हज्ज करने की शक्ति दे, और वह वांछित विधि के अनुसार हज्ज के रस्म को पूर्ण करे एवं अल्लाह की अवैध की गई चीज़ों से वंचित रहे, अर्थात: शोर, अवज्ञा एवं अनैतिकता और लड़ाई-झगड़े से दूर रहे तो वह इसका योग्य है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वचन के अनुसार उस बदले और सवाब को प्राप्त करे की स्वीकृति हज्ज का बदला स्वर्ग ही है। (इसे बुख़ारी: १७७३, मुस्लिम: १३४९ ने अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अ़नहु से रिवायत किया है।) ए अल्लाह के दासो! ये ६ उपासनाएं हैं, जो ज़िलहिज्जा के १० दिनों में किए जाने वाले मुस्तहब पुण्य कार्य की सूची के शीर्ष पर हैं। यह उपासनाएं संपूर्ण वर्ष के अन्य सर्वश्रेष्ठ दिनों की तुलना में ज़िलहिज्जा के १० दिनों के साथ आवंटित हैं। इन १० दिनों में चूंकि ये उपासनाएं इकट्ठा हो जाती हैं इस कारणवश इन दिनों को वर्ष के अन्य दिनों पर एक प्रकार की श्रेष्ठता

प्राप्त है, वह इस प्रकार की संपूर्ण मौलिक उपासनाएं इन में इकट्ठा हो जाती हैं, उदाहरण स्वरूप: नमाज़, उपवास, दान-पुण्य एवं हज्ज। ये उपासनाएं अन्य दिनों में इकट्ठा नहीं होतीं। यह कथन इब्ने हजर रहिमहुल्लाह का है। (देखें: फ़तहुल्-बारी: २/५३४, हदीस व्याख्या: ९६९)

यह बहुत ही चिंताजनक बात है कि लोग रमज़ान के अंतिम चरण में बहुत ही जोश एवं गतिविधि का प्रदर्शन करते हैं, जबकि ज़िलहिज्जा के इन १० दिनों में वह जोश एवं गतिविधि नहीं दिखाते जबकि यह दिन अधिक श्रेष्ठ एवं सर्वोच्च हैं।

महान ताबेई़ सई़द बिन जुबेर रहिमहुल्लाह का अभ्यास था कि वह ज़िलहिज्जा के १० दिन आते तो बहुत ही परिश्रम एवं लगन के साथ उपासना में लग जाते यहां तक कि प्राण को भी ख़तरे में डाल देते। (इसे दारमी ने अपने सुनन: १८१५ में रिवायत किया है, प्रकाशक: दारुल्-मुग़नी, शोधकर्ता: हुसैन सलीम असद, इसके अतिरिक्त इसे बैहक़ी ने "अश्-शअ़ब" में हदीस संख्या: ३७५२ के अंतर्गत रिवायत किया है।)

उनका यह कथन भी रिवायत किया जाता है: "ज़िलहिज्जा के १० रात्रियों में दीप को मत बुझाया करो।" (सियरु-अअ़लामिन्-नुबलाअ:४/३२६)

अर्थात: उन रात्रियों को क़ुरआन के सस्वर पाठ एवं तहज्जुद के माध्यम से जीवित रखा करो।

आइए हम अल्लाह से सहायता की मांग करते हुए इन दिनों में अधिकतम पुण्य कार्य करते हैं एवं उन पुण्य कार्य को पूरा करने हेतु एक दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं और इन कार्यों पर बदले और सवाब की

अल्लाह तआ़ला से आशा रखते हैं, क्योंकि आज पुण्य करने का अवसर है लेखांकन का नहीं, और प्रलय का दिन लेखांकन होगा पुण्य का अवसर नहीं।

(سَابِقُوٓاْ إِلَىٰ مغفرة مِّن رَّبِّكُمۡ وَجَنَّةٍ عَرۡضُهَا كَعَرۡضِ ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِ أُعِدَّتۡ لِلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦۚ**)**

अर्थात: "आओ! लपको अल्लाह के क्षमा की ओर एवं उस स्वर्ग की ओर जिसकी चौड़ाई आकाश एवं पृथ्वी की चौड़ाई के समान है, यह उन लोगों हेतु बनाई गई है जो अल्लाह और उसके रसूल पर विश्वास रखते हैं।"

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निःसंदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله على فضله وإحسانه، والشكر له على توفيقه وامتنانه، وأشهد أن لا اله الا الله وحده لا شريك له تعظيما لشأنه، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله، صلى الله عليه وعلى آله وأصحابه وسلم تسليما كثيرا، أما بعد**!**

ए मुसलमानो! आप यह ज्ञात रखें कि ज़िलहिज्जा के १० दिन रमज़ान के अंतिम १० दिनों से भी सर्वश्रेष्ठ हैं, इस कारणवश इन दिनों में बहुत ही परिश्रम एवं लगन के साथ उपासना करें, हाफ़िज़ इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह लिखते हैं: संपूर्ण बातों का सारांश यह है कि इन १० दिनों के संदर्भ में कहा गया है कि ये वर्ष के संपूर्ण दिनों में सर्वश्रेष्ठ हैं, उदाहरण स्वरूप हदीस में इसकी व्याख्या आई है, अनेक महा ज्ञानियों ने इन दिनों को रमज़ान के अंतिम १० दिनों की तुलना में उच्च स्थान दिया है, क्योंकि (रमज़ान के अंतिम १० दिनों में) जो उपासनाएं अवैध हैं, उन्हें इन दिनों में भी वैधता प्राप्त है, उदाहरण स्वरूप: नमाज़, उपवास, दान-पुण्य आदि, परंतु ज़िलहिज्जा के १० दिनों की विशिष्ट विशेषता यह है कि इसमें हज की दायित्व पूरी की जाती है।

एक कथन यह भी है कि रमज़ान के अंतिम १० रात्रि ज़्यादा श्रेष्ठ हैं, क्योंकि इसमें शबे क़द्र आती है जो हज़ार महीनों से भी श्रेष्ठ है।

एक समूह ऐसा भी है जिसने मध्यता को अपनाते हुए कहा है: ज़िलहिज्जा के १० दिन अधिक श्रेष्ठ हैं, जबकि रमज़ान की (अंतिम) १० रात्रियों को श्रेष्ठता प्राप्त है। इस प्रकार संपूर्ण साक्ष्यों के बीच मध्यता की परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है। वल्लाहु अअ़लमु! (अल्लाह तआ़ला ही सर्वोच्च ज्ञानी है!)

(तफ़सीर इब्ने कसीर: सूरतुल्- हज्ज श्लोक संख्या: २८, यह उनके गुरु इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह का भी कथन है, जैसा कि मजमूउल-फ़तावा इब्ने

तैमिया: २५/२८७ के अंतर्गत उल्लेख किया गया है, इसके अतिरिक्त इब्ने क़ैय्यिम रहि़महुल्लाह का भी कथन है जैसा कि बदाएउ़ल्-फ़वाएद: ३/११०२, प्रकाशक: आ़लमुल्-फ़वाएद में है।)

आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा-दया अवतरित करे- कि जो व्यक्ति बलिदान देने की इच्छा रखता हो उसके लिए वैध नहीं कि वह बाल, नाखून एवं चमड़े को काटे' उदाहरण स्वरूप: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है: "जब तुम ज़िलहिज्जा का चंद्रमा देखो, और तुम में से जो व्यक्ति बलिदान देने की इच्छा रखता हो, तो वह अपने बालों एवं नाखूनों को ना काटे।" (इसे मुस्लिम: १९७७ ने उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अ़नहा से रिवायत किया है।)

सहीह मुस्लिम की दूसरी रिवायत में ये शब्द आए हैं: "जब ज़िलहिज्जा के १० दिन प्रारंभ हो जाएं, और तुम में से कोई व्यक्ति बलिदान देने की इच्छा रखता हो तो वह अपने बाल एवं चमड़े को ना काटे।"

ए मुसलमानो! इस्लाम धर्म की विशेषताओं में से यह भी है कि वह कष्ट एवं रुकावट को दूर करता है, इस कारणवश जिस व्यक्ति के लिए बाल, नाखून एवं चमड़े काटना अति आवश्यक हों तो उसके लिए इसमें कोई रोक नहीं है, इब्ने उ़सैमीन रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: जिस व्यक्ति को बाल, नाखून एवं चमड़ा काटने की आवश्यकता पड़ जाए एवं वह काट भी ले तो इसमें कोई चिंता की बात नहीं है। उदाहरण स्वरूप उसे कई घाव हो जिसके हेतु उसे बाल काटने की आवश्यकता पड़ जाए अथवा उसका नाखून उखड़

जाए और वह उसके लिए दुखद हो, तो वह नाखून के दुखद पाठ को काट दे, यदि चमड़ा कट कर लटकने लगे और उसे दर्द पहुंचाए तो वह उसे काट दे, इन संपूर्ण परिस्थितियों में उसके लिए कोई रोक नहीं है। (मजमूउल-फ़तावा इब्ने उ़सैमीन: २५/१६१) इब्ने उ़सैमीन रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

ए मुसलमानो! जब हाजी बलिदान का इच्छा करे तो वह भी इस प्रक्रिया के अंतर्गत आता है इस कारणवश वह भी अपने बाल और नाखून ना काटे यहां तक कि उ़मरा कर ले। यदि उ़मरा कर ले तो उसके लिए बाल कटवाना अनिवार्य है इस कारणवश वह बाल कटवा ले भले ही वह अपने देश में बलिदान देने की इच्छा रखता हो, क्योंकि उ़मरा में बाल कटवाना उ़मरा का महत्वपूर्ण पाठ है। यह इब्ने बाज़ एवं इब्ने उ़सैमीन रहिमहुमल्लाह का कथन है। (मजमूउल-फ़तावा इब्ने बाज़: १७/२३३, मजमूउल-फ़तावा इब्ने उ़सैमीन: २५/१४२)

आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर कृपा दृष्टि करे- कि अल्लाह ने आपको एक ऐसे कार्य का आदेश दिया है जिसका प्रारंभ अपने आप से किया है फिर सर्वोच्च पालनहार की स्वच्छता बताने वाले देव दूतों को इसका आदेश दिया, फिर मुस्लिम समुदाय के तमाम मनुष्य एवं जिन्नातों को इसका आदेश देते हुए फ़रमाया:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.

अर्थात: "अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत अपने दूत पर रहमत भेजते हैं, ए मोमिनो! तुम भी उन पर दरूद भेजो और ख़ूब सलाम भेजते रहा करो।"

- हे अल्लाह! तू अपने दास एवं दूत पर अपनी रहमत एवं सलामती अवतरित कर, उनके पश्चात आने वाले शासकों, महान आज्ञाकारों एवं प्रलय के दिन तक शुद्धता के साथ उनकी आज्ञाकारीता करने वालों से प्रसन्न हो जा।

- हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं श्रेष्ठता प्रदान कर, बहुदेव वाद एवं बहूदेव वादियों को अपमानित कर दे एवं अपने धर्म की रक्षा कर।

- हे अल्लाह! हमें अपने देशों में अमन और शांति वाला जीवन प्रदान कर, हे अल्लाह! हमारे इमामों एवं शासकों को सुधार दे, एवं उनके प्रजाओं हेतु उन्हें कृपालु बना।

- हे अल्लाह हमें ज़िलहिज्जा के सर्वश्रेष्ठ दिनों तक पहुंचा एवं उन दिनों में उपवास रखने, व्यवस्था पूर्वक तहज्जुद पढ़ने एवं स्मरण करने हेतु व्यस्त रहने में हमें सहायता एवं सहयोग प्रदान कर।

- हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं तेरे प्रदान किए गए वरदानों के नष्ट होने से, तेरी स्वास्थ्य के हट जाने से, तेरी अचानक आने वाली यातना से एवं तेरे हर प्रकार के क्रोध

से।

- हे अल्लाह! हम फुलबहरी (बर्स), पागलपन, कोढ़ एवं संपूर्ण प्रकार के रोगों से तेरा शरण चाहते हैं।

● हे हमारे पालनहार! हमें संसार में पूण्य दे, प्रलय के दिन भी भलाई प्रदान कर एवं नरक की यातना से वंचित रख।

عباد الله! إِنَّ ٱللَّهَ يَأۡمُرُ بِٱلۡعَدۡلِ وَٱلۡإِحۡسَٰنِ وَإِيتَآيِٕ ذِي ٱلۡقُرۡبَىٰ وَيَنۡهَىٰ عَنِ ٱلۡفَحۡشَآءِ وَٱلۡمُنكَرِ وَٱلۡبَغۡيِۚ يَعِظُكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُونَ، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروا الله على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، و الله يعلم ما تصنعون.

लेखक:

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

२९/ ज़ील्-क़ादा/१४४२ हि०

००९६६५०५९०६७६१

अनुवाद:

तारिक़ बदर सनाबिली

binhifzurrahman@gmail.com